

2025 गणतंत्र दविस परेड में हरयाणा की झाँकी शामलि

चर्चा में क्यों?

वर्ष 2025 के [गणतंत्र दविस परेड](#) में हरयाणा की झाँकी वभिन्न क्षेत्रों में राज्य की प्रगतीको उजागर करेगी, जसिमें जनता को लाभ पहुँचाने वाली सरकारी योजनाओं पर वशिष ध्यान दया जाएगा ।

मुख्य बदि

- गणतंत्र दविस परेड में हरयाणा की झाँकी:
 - झाँकी में कुरुक्षेत्र में भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दयि गए [भगवद् गीता](#) के दविय संदेश को दर्शाया जाएगा ।
 - हरयाणा की झाँकी का वषिय "समृद्ध हरयाणा- वरिसत और वकिस" कुरुक्षेत्र में अपनी ऐतहिसकि जड़ों से लेकर आधुनकि उपलब्धयिों तक हरयाणा की यात्रा को दर्शाता है ।
- गणतंत्र दविस परेड 2025 की मुख्य वशिषताएँ:
 - गणतंत्र दविस 2025 का वषिय 'स्वर्णमि भारत- वरिसत और वकिस' है, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतकि वरिसत और इसकी प्रगती की नरितर यात्रा को दर्शाता है ।
 - 2025 की गणतंत्र दविस परेड में तीनों सेनाओं की झाँकी भी शामलि होगी, जसिमें सशस्त्र बलों के बीच सहयोग और एकीकरण की भावना पर जोर दया जाएगा । इस झाँकी का वषिय "सशक्त और सुरक्षति भारत" है ।
 - वभिन्न राज्यों, केंद्र शासति प्रदेशों और केंद्रीय मंत्रालयों की 31 झाँकयिों इसमें भाग लेंगी, जो भारत की सांस्कृतकि वविधिता और प्रगती को दर्शाएँगी ।
 - गणतंत्र दविस परेड 2025 भारत की सांस्कृतकि वविधिता और सैन्य शक्तिका एक अनूठा मशिरण होगा, जसिमें [संवधान](#) लागू होने के 75 वर्ष और जन भागीदारी पर वशिष ध्यान दया जाएगा ।
- इंडोनेशया की भागीदारी:
 - इंडोनेशया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबयिांटो परेड के मुख्य अतिथि होंगे ।
 - इंडोनेशया की 160 सदस्यीय मार्चगि टुकड़ी और 190 सदस्यीय बैंड टुकड़ी भी [भारतीय सशस्त्र बलों](#) के साथ मार्च करेगी ।

गणतंत्र दविस

- गणतंत्र दविस 26 जनवरी, 1950 को भारत के संवधान के अंगीकरण तथा देश के गणतंत्र में परिवर्तन की स्मृतीमें मनाया जाता है, जो 26 जनवरी, 1950 को प्रभावी हुआ ।
 - संवधान को [भारत की संवधान सभा द्वारा 26 नवंबर, 1949](#) को अपनाया गया तथा 26 जनवरी, 1950 को लागू कया गया ।
- 26 जनवरी, 1950 को प्रभावी होने पर संवधान ने भारतीय स्वतंत्रता अधनियम, 1947 और भारत सरकार अधनियम, 1935 को नरिसत कर दया । भारत बरतिशि कराउन का प्रभुत्व नहीं रहा और संवधान के साथ एक संप्रभु, लोकतांत्रकि गणराज्य बन गया ।
- प्रतविरष गणतंत्र दविस पर भारत के राष्ट्रपति, जो राज्य के प्रमुख होते हैं, तरिंगा फहराते हैं, जबकि स्वतंत्रता दविस (15 अगस्त) पर प्रधानमंत्री, जो केंद्र सरकार का नेतृत्व करते हैं, राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं ।
 - यद्यपि दोनों शब्दों का प्रयोग प्रायः एक दूसरे के स्थान पर कया जाता है, लेकिन ये तरिंगे को प्रस्तुत करने की भन्न-भन्न तकनीकों को दर्शाते हैं ।

